تعريف موجز بالإسلام
باللغة : الهندية
Introduction to Islam in Indian Language

इस्लाम धर्म का संक्षिप्त परिचय

सारी प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं जो सारे संसार का "रब" (पालनकर्त्ता) है। अल्लाह के अंतिम नबी मुहम्मद पर, जो सारे नबियों के सरदार हैं, अल्लाह की कृपा हो।

इस्लाम ईशदूतत्व (रिसालत) की अंतिम कड़ी के तौर पर पूर्ण परिष्कृत धर्म है जिसको अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी मुहम्मद पर उतारा, और ईशदूतत्व (रिसालत) के सिलसिले को सदैव के लिए समाप्त कर दिया। इस्लाम ही वह धर्म है जिसके अतिरिक्त अल्लाह किसी और धर्म को मान्यता नहीं देता। इस धर्म को उसने बड़ा सरल बनाया है, जिसमें किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं है। उसने इसको ग्रहण करने वालों पर कोई ऐसा बोझ नहीं डाला, जिसकी वे शक्ति नहीं रखते हों। इस धर्म का आधार तौहीद (एकेश्वरवाद) है। इसकी पहचान सत्यता, न्याय तथा सच है, इसका निचोड़ एक दूसरे पर दया करना है। यह ऐसा धर्म है जो हर लाभदायक चीज़ का आदेश देता है और हानिकारक से वर्चित करता है। यह एक ऐसा धर्म है जिसके द्वारा अल्लाह अपने बन्दों का विश्वास तथा सदाचार ठीक करता है। इसके द्वारा सांसारिक तथा पारलौकिक जीवन को संवारता है। इसके द्वारा टूटे हृदयों को जोड़ता है। इसके द्वारा सत्य मार्ग का प्रदर्शन करता है। यह एक ऐसा धर्म है जिसमें सारे आदेश स्पष्ट हैं, चाहे वे धारणाएं हों या कर्म, आचार हों या व्यवहार। संक्षेप में इस्लाम की शिक्षाएं ये हैं—

1. मनुष्यों को अपने "रब" (पालनकर्त्ता) तथा पैदा करने वाले के नामों, गुणों तथा कर्मों से परिचित कराना।

2. बन्दों को केवल अल्लाह की उपासना का निमंत्रण देना, और यह स्पष्ट करना कि उसका कोई साझी नहीं है, वह इस प्रकार कि उसके बताये हुए कर्मों को ग्रहण करना और जिससे उसने वर्जित किया हो उससे रुक जाना।

3. मृत्यु पश्चात् आने वाले जीवन का स्मरण कराना, और उनके साथ क़ब्र में अथवा मरने के बाद क्या होने वाला है? और फिर प्रलय दिवस को उठाये जाने के पश्चात् उनका स्थान क्या होगा स्वर्ग या नरक!

अब आइए हम संक्षेप में इस्लाम के आधार बताते हैं।

प्रथम : विश्वास

इसके छः स्तम्भ हैं—

1. अल्लाह पर विश्वास : अल्लाह पर विश्वास का अर्थ है :

(क) अल्लाह रब (पालनकर्त्ता) है अर्थात, वही रब है, वही सृष्टि का रचयिता है, वही हमारा स्वामी है, वही सारे ब्रह्माण्ड को चला रहा है, वही सर्वाधिकारी है।

(ख) उसके इलाह (पूजनीय) होने पर विश्वास, अथात वही केवल पूज्य के योग्य है, उसके अतिरिक्त कोई भी पूजा-पाठ के योग्य नहीं, उसको छोड़कर जिनकी भी पूजा की जाती है वह सब मिथ्या हैं।

(ग) उसके नामों तथा गुणों पर विश्वास अर्थात् सभी श्रेष्ठ तथा उत्तम नाम उसी के हैं, वह उन सारे गुणों में पूर्ण है जिनका विवरण क़ुरआन और हदीस में आया है।

2. फ़रिश्तों पर विश्वास : अर्थात्, अल्लाह ने फ़रिश्तों को पैदा किया, जो उसकी उपासना करते हैं, उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, अल्लाह ने उनको विभिन्न कामों पर लगाया है, जैसे "जिबरील" जो ''वह्य" (ईशवाणी) अल्लाह के नबियों तक पहुंचाते हैं, उनमें से एक "मीकाईल" हैं जिनको वर्षा बरसाने का काम दिया गया है, एक "इसराफ़ील" हैं जो प्रलय दिवस पर "सूर" (नरसिंघा) फूंकने के काम पर लगाए गए हैं, एक (मृत्यु का फ़रिश्ता) हैं जिनको मृत्यु के समय आत्मा ग्रसित करने के काम पर लगाया गया है। अर्थात्, ये सभी फ़रिश्ते अल्लाह के बताये हुए कामों पर लगे हुए हैं। फ़रिश्तों में से किसी को कोई और अधिकार नहीं है।

3. अल्लाह की भेजी हुई पुस्तकों पर विश्वास : अल्लाह ने अपने नबियों पर पुस्तकें उतारी हैं, जिनमें इन्सानों के लिए मार्गदर्शन है। उनमें से वे पुस्तकें जिनका वर्णन क़ुरआन में आया है वे ये हैं—

1. "तौरात" जो "मूसा" पर उतरी, जिसमें इसराईल की संतान को मार्गदर्शन किया गया है।

2. "इंजील" जो "ईसा" पर उतरी।

3. "ज़बूर" जो "दाऊद" को दी गई।

4. इबराहीम के सहीफ़े।

5. और अन्त में "पवित्र क़ुरआन" जो प्रलय दिवस (क़ियामत) तक के लिए है। इसके पश्चात् अब कोई किताब नहीं आएगी। इसने उन सारी किताबों को उससे पहले आयी थीं, निरस्त कर दिया। अब यह प्रलय दिवस तक मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा, क्योंकि अल्लाह ने स्वयं इसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी ली हुई है। इसलिए पहली पुस्तकों की भांति इसमें कोई तहरीफ़ (उलट-फेर) नहीं कर सकता।

4. नबियों पर विश्वास : अल्लाह ने संसार में बहुत सारे नबी भेजे। प्रथम नबी आदम (अलै०) थे और अन्तिम मुहम्मद (सल्ल०)। ये नबी हमारी तरह स्रष्ट इन्सान हैं, इनमें किसी प्रकार का स्रष्टा का गुण नहीं पाया जाता। ये अल्लाह के सदाचारी बन्दे हैं। अल्लाह ने उनको अपना "नबी" बनाकर इन पर बड़ा उपकार किया और अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्ल०) के पश्चात् नुबूव्वत (ईशदूतत्व) की शृंखला को समाप्त कर दिया। आपका लाया हुआ इस्लाम धर्म सारे मनुष्यों के लिए है।

5. अन्तिम न्याय दिवस पर विश्वास : अन्तिम दिवस के पश्चात् फिर कोई दिवस नहीं, उस दिन अल्लाह सारे प्राणी को धरती से उठाएगा, और न्याय करने के पश्चात् स्वर्ग या नरक में भेज देगा। अन्तिम न्याय दिवस पर विश्वास का अर्थ यह है कि मृत्यु के पश्चात् जो कुछ होने वाला है उस पर विश्वास किया जाए, जैसे क़ब्र में अथवा मरने के बाद क्या होने वाला है और उठाये जाने के पश्चात् हिसाब-किताब, फिर स्वर्ग या नरक में सदैव के लिए ठिकाना।

6. भाग्य पर विश्वास : इसका अर्थ है कि अल्लाह को यहां जो कुछ भी हो रहा है, उसका ज्ञान है। वह सब कुछ उसके पास लिखा हुआ है। यहां जो कुछ हो रहा है उसी की इच्छा से हो रहा है।

द्वितीय : इस्लाम के स्तंभ

इस्लाम के कुछ पांच स्तंभ हैं, जिनको ग्रहण किए बिना कोई व्यक्ति सच्चा मुसलमान नहीं बन सकता और वे ये हैं—

1. "कलिमा शहादत" : इस बात की गवाही (साक्ष्य) देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूजनीय नहीं, और मुहम्मद उसके भेजे हुए रसूल हैं।

इसका अर्थ यह है कि केवल अल्लाह ही हमारा पालनकर्त्ता है इसलिए केवल वही पूजनीय है, उसके अतिरिक्त जिनकी भी पूजा की जाती है मिथ्या है। मुहम्मद रसूलुल्लाह का अर्थ है कि हम आपकी बताई हुई बातों पर विश्वास करें, और जिसका आपने आदेश दिया है उसका पालन करें, और जिससे आपने वर्जित किया है उससे रुक जाएं और अल्लाह एवं उपासना और इबादत का वही नियम अपनाएं जिसका आपने आदेश दिया है।

2. "सलात" : इसको "नमाज़" भी कह सकते हैं। यह चौबीस घंटे में पांच बार पढ़ी जाती है। यह आदेश अल्लाह ही ने दिया है, बन्दों पर उसने जो उपकार किए हैं तो अल्लाह का हक़ बनता है कि उसकी उपासना की जाए। इस प्रकार देखा जाए तो "नमाज़" अल्लाह और बन्दे को आपस में जोड़ने का उत्तम साधन है, क्योंकि इसके द्वारा बन्दा अल्लाह को पुकारता है, उससे मुनाजात अथवा सरगोशी करता है। जब एक मुसलमान नमाज़ इस प्रकार अदा करेगा तो नमाज़ उसको हर प्रकार की बुराइयों से रोकेगी। नमाज़ी को अल्लाह संसार एवं परलोक में बहुत सारे पुण्य देगा, इसके द्वारा उसको शारीरिक और आत्मिक संतोष होगा।

3. "ज़कात" : यह एक प्रकार का धार्मिक कर है जो हर उस मुसलमान को प्रत्येक वर्ष देना पड़ता है, जिस पर "ज़कात" फ़र्ज़ हो जाए। इसको निर्धन लोगों में बांटा जाता है। इस प्रकार धनवान अपने धन को शुद्ध करते हैं, उनके अंदर निर्धनों के लिए सहानुभूति पैदा होती है और मुस्लिम समाज में सब भाई-भाई दिखाई देने लगते हैं। न तो धनवाने निर्धनों से घृणा करते हैं, न निर्धन धनवानों से ईर्ष्या।

4. "सियाम" अर्थात् व्रत : प्रत्येक वर्ष मुसलमानों पर "रमज़ान" मास में व्रत (रोज़ा) फ़र्ज़ किया गया है। इसका अर्थ है सुबह से रात्रि तक खान-पान तथा स्त्रियों से अपने आपको वर्जित करना। इसके द्वारा आत्मा की शुद्धि होती है। रोज़ेदार के गुनाह दूर होते हैं, और स्वर्ग में उसकी श्रेणी बुलंद होती है। इस व्रत के और बहुत सारे लाभ हैं।

5. "हज" : यह वह सफ़र है जो मुसलमान मक्का की ओर करता है जहां अल्लाह का घर "काबा" है। अल्लाह ने हर उस मुसलमान पर जिसके पास इतना धन हो कि मक्के का सफ़र कर सकता हो, उसके पूरे जीवन में एक बार फ़र्ज़ किया है। संसार के कोने-कोने से मुसलमान एक स्थान पर इकट्ठा होते हैं, एक "रब" (पालनकर्त्ता) की उपासना करते हैं। एक प्रकार का वस्त्र धारण करते हैं, वह एक ऐसा दृश्य होता है जहां धनवान तथा निर्धन, काले तथा गोरे, सब एक समान होते हैं और सब मिलकर हज अदा करते हैं। इसमें विशेष रूप से "अरफ़ात" जाना, फिर "काबे" का तवाफ़, फिर सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ लगाना,

और फिर मिना में तीन दिन तक रुकना, और शैतान को प्रत्येक दिन कंकरी मारना सम्मिलित है। हज के बहुत सारे लाभ हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

तृतीय : इस्लाम ने मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन तथा सामाजिक जीवन, दोनों के लिए एक विशेष व्यवस्था कर दी है जिसके द्वारा वह इहलोक तथा परलोक दोनों संसारों में सफलता पा सकता है। इस्लाम ने विवाह करने को जाइज़ (उचित) बताया, परन्तु "ज़िना" (व्यभिचार) से वर्जित किया है, इसी प्रकार उसने हर बुराई से रोका और हर भलाई का आदेश दिया। इसके पश्चात् भी अगर कोई बुराई से नहीं रुकता है बल्कि दूसरों पर अत्याचार करता है तो उसके लिए कड़े दंड का प्रावधान किया। जैसे इस्लाम धर्म छोड़ना, व्यभिचार करना, मदिरा पान इत्यादि। इसी प्रकार किसी की हत्या करना, चोरी करना, किसी पर झूठा आरोप लगाना, किसी को अकारण मारना वग़ैरह। फिर जो दंड उसने निर्धारित किए हैं वे गुनाह और अपराध के अनुकूल हैं। इसी प्रकार इस्लाम ने मनुष्य और शासक के सम्बन्ध को भी स्पष्ट किया है। मनुष्य को आदेश दिया कि वह शासक का आज्ञापालन करे और उसके विरुद्ध कोई काम न करे अगर उसका आदेश अल्लाह के आदेश के विपरीत नहीं है, क्योंकि शासक के विरुद्ध चलने से संसार में बिगाड़ पैदा होगा।

हम संक्षेप में कह सकते हैं कि इस्लाम ने अल्लाह और बन्दे के संबंध को उचित रूप से उजागर किया है। इसी प्रकार मनुष्य का संबंध समाज से उचित प्रकार से जोड़ा है। कोई ऐसा भलाई का काम नहीं है जिसका इस्लाम ने आदेश न दिया हो, और कोई बुराई ऐसी नहीं है जिससे इस्लाम ने वर्जित न किया हो और यही एक सत्य और पूर्ण धर्म की पहचान है।